

🏠 [Home](#) ▶ [God](#) ▶ [Hanuman](#) ▶ Hanumaan Chalisa – English, Hindi, Lyrics, Mp3, Video



**Krishna Kutumb Blog**

Changing Lives With Devotion

<https://www.krishnakutumb.com/blog/>

## HANUMAAN CHALISA – HINDI LYRICS

श्रीगुरु चरण् सरोजरज, निजमनमुकुर सुधार ।

बरणौ रघुबर बिमल यश, जो दायक फलचार ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार ।

बल बुद्धिविद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥

---

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।

जै कपीस तिहुँलोक उजागर ॥

रामदूत अतुलित बलधामा ।

अंजनि-पुत्र पवन-सुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।

कुमति निवार सुमति के संगी ॥

कंचन बरण बिराज सुबेशा ।

कानन कुंडल कुंचित केशा ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।

काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥

शंकर-सुवन केशरी-नन्दन ।

तेज प्रताप महा जग-वंदन ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर ।

राम काज करिबे को आतुर ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।

रामलखन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूपधरि सियहिं दिखावा ।

विकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।

रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लखन जियाये ।

श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई ।

तुम मम प्रिय भरतहिसम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं ।

अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।

नारद शारद सहित अहीशा ॥

यम कुबेर दिगपाल जहाँते ।

कवि कोविद कहि सकैं कहाँते ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।

राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना ।

लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥

युग सहस्र योजन पर भानू ।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँधि गये अचरजनाहीं ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा बिन पैसारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।  
तुम रक्षक काहू को डरना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै ।  
तीनों लोक हाँकते काँपै ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।  
महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नाशौ रोग हरै सब पीरा ।  
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥

संकट से हनुमान छुडावै ।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।  
तिनके काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोइ लावै ।  
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥

चारों युग परताप तुम्हारा ।  
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

साधु संत के तुम रखवारे ।  
असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्टसिद्धि नव निधि के दाता ।  
अस बर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन रामको पावै ।  
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥

अन्त काल रघुपति पुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई ।  
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥

संकट हरै मिटै सब पीरा ।  
जो सुमिरै हनुमत बल बीरा ॥

जै जै जै हनुमान गोसाई ।  
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥

जोह शत बार पाठ कर जोई ।  
छुटहि बन्दि महासुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।

कीजै नाथ हृदय महुँ डेरा ॥

---

पवनतनय संकट हरन,  
मंगल मूरति रूप ।  
रामलखन सीता सहित,  
हृदय बसहु सुरभूप ॥

## HANUMAAN CHALISA – HINDI MEANING

श्री गुरु महाराज के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवीर के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाला है।

हे पवन कुमार! मैं आपको सुमिरन करता हूँ। आप तो जानते ही हैं कि मेरा शरीर और बुद्धि निर्बल है। मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं ज्ञान दीजिए और मेरे दुखों व दोषों का नाश कर दीजिए।

---

श्री हनुमान जी! आपकी जय हो। आपका ज्ञान और गुण अथाह है। हे कपीश्वर! आपकी जय हो! तीनों लोकों, स्वर्ग लोक, भूलोक और पाताल लोक में आपकी कीर्ति है।

हे पवनसुत अंजनी नंदन! आपके समान दूसरा बलवान नहीं है।

हे महावीर बजरंग बली! आप विशेष पराक्रम वाले हैं। आप खराब बुद्धि को दूर करते हैं, और अच्छी बुद्धि वालों के साथी, सहायक हैं।

आप सुनहले रंग, सुन्दर वस्त्रों, कानों में कुण्डल और घुंघराले बालों से सुशोभित हैं।

आपके हाथ में बज्र और ध्वजा है और कन्धे पर मूंज के जनेऊ की शोभा है।

शंकर के अवतार! हे केसरी नंदन आपके पराक्रम और महान यश की संसार भर में वन्दना होती है।

आप प्रकान्ध विद्या निधान है, गुणवान और अत्यन्त कार्य कुशल होकर श्री राम के काज करने के लिए आतुर रहते है।

आप श्री राम चरित सुनने में आनन्द रस लेते है। श्री राम, सीता और लखन आपके हृदय में बसे रहते है।

आपने अपना बहुत छोटा रूप धारण करके सीता जी को दिखलाया और भयंकर रूप करके लंका को जलाया।

आपने विकराल रूप धारण करके राक्षसों को मारा और श्री रामचन्द्र जी के उद्देश्यों को सफल कराया।

आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को जिलाया जिससे श्री रघुवीर ने हर्षित होकर आपको हृदय से लगा लिया।

श्री रामचन्द्र ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि तुम मेरे भरत जैसे प्यारे भाई हो।

श्री राम ने आपको यह कहकर हृदय से लगा लिया की तुम्हारा यश हजार मुख से सराहनीय है।

श्री सनक, श्री सनातन, श्री सनन्दन, श्री सनत्कुमार आदि मुनि ब्रह्मा आदि देवता नारद जी, सरस्वती जी, शेषनाग जी सब आपका गुण गान करते है।

यमराज, कुबेर आदि सब दिशाओं के रक्षक, कवि विद्वान, पंडित या कोई भी आपके यश का पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकते।

आपने सुग्रीव जी को श्रीराम से मिलाकर उपकार किया, जिसके कारण वे राजा बने।

आपके उपदेश का विभिषण जी ने पालन किया जिससे वे लंका के राजा बने, इसको सब संसार जानता है।

जो सूर्य इतने योजन दूरी पर है कि उस पर पहुंचने के लिए हजार युग लगे। दो हजार योजन की दूरी पर स्थित सूर्य को आपने एक मीठा फल समझकर निगल लिया।

आपने श्री रामचन्द्र जी की अंगूठी मुंह में रखकर समुद्र को लांघ लिया, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

संसार में जितने भी कठिन से कठिन काम हो, वो आपकी कृपा से सहज हो जाते है।

श्री रामचन्द्र जी के द्वार के आप रखवाले है, जिसमें आपकी आज्ञा बिना किसी को प्रवेश नहीं मिलता अर्थात् आपकी प्रसन्नता के बिना राम कृपा दुर्लभ है।

जो भी आपकी शरण में आते हैं, उस सभी को आनन्द प्राप्त होता है, और जब आप रक्षक हैं, तो फिर किसी का डर नहीं रहता।

आपके सिवाय आपके वेग को कोई नहीं रोक सकता, आपकी गर्जना से तीनों लोक कांप जाते हैं।

जहां महावीर हनुमान जी का नाम सुनाया जाता है, वहां भूत, पिशाच पास भी नहीं फटक सकते।

वीर हनुमान जी! आपका निरंतर जप करने से सब रोग चले जाते हैं और सब पीड़ा मिट जाती है।

हे हनुमान जी! विचार करने में, कर्म करने में और बोलने में, जिनका ध्यान आपमें रहता है, उनको सब संकटों से आप छुड़ाते हैं।

तपस्वी राजा श्री रामचन्द्र जी सबसे श्रेष्ठ हैं, उनके सब कार्यों को आपने सहज में कर दिया।

जिस पर आपकी कृपा हो, वह कोई भी अभिलाषा करें तो उसे ऐसा फल मिलता है जिसकी जीवन में कोई सीमा नहीं होती।

चारों युगों सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में आपका यश फैला हुआ है, जगत में आपकी कीर्ति सर्वत्र काशमान है।

हे श्री राम के दुलारे! आप सज्जनों की रक्षा करते हैं और दुष्टों का नाश करते हैं।

आपको माता श्री जानकी से ऐसा वरदान मिला हुआ है, जिससे आप किसी को भी आठों सिद्धियां और नौ निधियां दे सकते हैं।

आप निरंतर श्री रघुनाथ जी की शरण में रहते हैं, जिससे आपके पास बुढ़ापा और असाध्य रोगों के नाश के लिए राम नाम औषधि है।

आपका भजन करने से श्री राम जी प्राप्त होते हैं और जन्म जन्मांतर के दुख दूर होते हैं।

अंत समय श्री रघुनाथ जी के धाम को जाते हैं और यदि फिर भी जन्म लेंगे तो भक्ति करेंगे और श्री राम भक्त कहलाएंगे।

हे हनुमान जी! आपकी सेवा करने से सब प्रकार के सुख मिलते हैं, फिर अन्य किसी देवता की आवश्यकता नहीं रहती।

हे वीर हनुमान जी! जो आपका सुमिरन करता रहता है, उसके सब संकट कट जाते हैं और सब पीड़ा मिट जाती है।

हे स्वामी हनुमान जी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो! आप मुझ पर कृपालु श्री गुरु जी के समान कृपा कीजिए।

जो कोई इस हनुमान चालीसा का सौ बार पाठ करेगा वह सब बंधनों से छूट जाएगा और उसे परमानन्द मिलेगा।

भगवान शंकर ने यह हनुमान चालीसा लिखवाया, इसलिए वे साक्षी हैं, कि जो इसे पढ़ेगा उसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।

हे नाथ हनुमान जी! तुलसीदास सदा ही श्री राम का दास है। इसलिए आप उसके हृदय में निवास कीजिए।

---

हे संकट मोचन पवन कुमार! आप आनंद मंगलों के स्वरूप हैं। हे देवराज! आप श्री राम, सीता जी और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास कीजिए।